28 दिसम्बर 2019 को श्रद्धेय अरूण जेटली पर लिखी गई पुस्तक "The Renaissance Man: The Many faces of Arun Jaitley" का विमोचन

आज प्रख्यात राजनीतिज्ञ, अधिवक्ता, खेल प्रशासक, अर्थशास्त्री, संसदविद्, राजनेता एवं प्रखर वक्ता आदरणीय अरूण जेटली के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर लिखी गई पुस्तक "The Renaissance Man: The Many faces of Arun Jaitley" के विमोचन के अवसर पर आयोजित विमोचन समारोह में सम्मिलित होकर मैं उनको स्मरण कर भाव विभोर हूँ।

आदरणीय अरूण जेटली जी अपने जीवन के अंतिम क्षण तक देश सेवा में समर्पित रहे। अपने जीवन के आखिरी क्षण तक वे लिखते रहे और देश और समाज को मार्गदर्शन देते रहे।

मुप्पाविरापु फाउंडेशन द्वारा इस संस्मरण संग्रह का शीर्षक बहुत सटीक "The Renaissance Man: The Many faces of Arun Jaitley" रखा गया है, वो वाकई बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे।

श्री अरूण जेटली दलीय प्रतिबद्धताओं से ऊपर उठकर सभी राजनीतिक दलों के स्वीकार्य नेता रहे हैं।

हृदय की विशालता और उनके विराट व्यक्तित्व के कारण राजनीति में उनकी अलग पहचान थी।

आज मैं लोक सभा स्पीकर के रूप में संसद में उनकी रिक्तता को बहुत महसूस करता हूँ।

उनके विराट व्यक्तित्व और सभी राजनीतिक दलों में उनकी स्वीकार्यता, संसद के प्रति उनकी अटूट निष्ठा के कारण आज हमें उनकी कमी खलती है।

विकासशील भारत से विकसित भारत बनाने के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सपने के वह कुशल रणनीतिकार थे।

केन्द्रीय मंत्री के रूप में विश्व व्यापार संधि के विभिन्न चरणों में उन्होंने विदेश में भारतीय हितों की रक्षा करने का काम किया।

उन्होंने 'न्यू इंडिया', 'आशाओं की पालिटिक्स' जैसे नए शब्द देकर देश की राजनीति को नया रूप देने का काम किया।

श्री अरूण जेटली जी एक कुशल विधि वेत्ता थे, वहीं सांसद और मंत्री, प्रतिपक्ष के नेता के रूप में तर्क-वितर्क के आधार पर और तथ्यों के आधार पर सदन में अपनी बात रखकर सभी पक्षों को निरूत्तर कर देते थे।

वे व्यक्तिगत जीवन में मित्रों के मित्र रहे और सामाजिक और पारिवारिक रिश्तों को निभाने में भी हमेशा ईमानदार रहे।

वे एक ऐसे नेता थे जिनकी राजनीति, विधि, संविधान के साथ-साथ आर्थिक मामलों और देश के लगभग हर क्षेत्र में, हर विषय पर उनकी राजनीतिक समझ व्यापक थी। उन्होंने जिस क्षेत्र में भी कार्य किया, अपनी अमिट छाप छोड़ी।

जब वे छात्र जीवन में छात्र नेता थे तो उन्होंने छात्रों को नेतृत्व प्रदान किया, उन्हें दिशा दी। जब पार्टी प्रवक्ता बने तो उन्होंने प्रवक्ता के रूप में सभी प्रवक्ताओं का मार्गदर्शन किया। जब उन्होंने संगठन में काम किया तो पूरी निष्ठा से काम करते हुए कई राज्यों में पार्टी को सत्ता में लाने का काम किया। जो भी उनको कार्य दिया जाता था उस कार्य को वे बड़ी जिम्मेदारी एवं कुशलता से निभाते हुए अपनी छाप छोड़ते थे।

संसदीय वाद-विवाद में उन्होंने अपने ज्ञान, विवेक एवं वक्तृत्व कला का सुन्दर मिश्रण प्रस्तुत किया है। उनके योगदान से हमारी संसद की सभाएं धन्य हुई हैं।

उनका यह आदर्श वाक्य था कि ''यह खत्म नहीं हुआ है यह तो अभी शुरूआत है।''

उनके विचार और दर्शन हम सबके दिलों में अब भी जीवित हैं। वे जब बीमार थे, तब भी हमेशा अपने लेखों के द्वारा सामाजिक विषयों पर लिखते रहते थे। जिन्दगी के अंतिम पड़ाव तक उन्होंने अपने जीवन को राष्ट्र की सेवा में समर्पित रखा। ऐसे थे हमारे जेटली जी।

एक केंद्रीय मंत्री एवं सांसद के रूप में सदन में उनकी छाप सदैव अमिट रहेगी। विशेष रूप से संसद में गतिरोध समाप्त करने में समन्वयक के रूप में उनकी हमेशा महत्वपूर्ण भूमिका रही।

अपने विनयपूर्ण व्यवहार से जेटली जी ने हर व्यवसाय, क्षेत्र और वर्ग में अपने मित्र बनाये। वे बहुत ही ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ और साफ हृदय के व्यक्ति थे।

संसदीय चर्चा में उनके सुविचारित मत, तर्कपूर्ण संवाद एवं सारगर्भित भाषण किसी युवा नेता के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध हो सकते हैं। वे सदैव हमारे दिलों में हैं, थे और रहेंगे एवं हमें सदैव प्रेरित करते रहेंगे।

आज जब उनके स्मरण में एक पुस्तक का विमोचन हो रहा है। मैं भाव विभोर हूँ। उनके सौम्य एवं आकर्षक चेहरे की झलक अनायास हमारे मन में आने लगी है। सर्वप्रिय एवं हंसमुख अरूण जेटली जी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

मैं इस विमोचन कार्यक्रम का आयोजन करने के लिए मुप्पावरापु फाउंडेशन को भी धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने इस कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया।